फसल कटाई के लिए कम्बाइन पर बढ़ती निर्भरता

भारत डोगरा

पिछले कुछ वर्षों की तरह इस बार भी देखा गया कि गेहूं की फसल की कटाई में कम्बाइन हारवेस्टर का उपयोग और बढ गया। अब तो कुछ अन्य फसलों की कटाई के लिए भी मशीनों के उपयोग की प्रवृत्ति बढ रही है। प्रायः इन भारी-भरकम मशीनों की उपस्थिति से प्रभावित होकर लोग इन्हें गांवों की प्रगति का प्रतीक मान लेते हैं। किंतु महत्वपूर्ण सवाल यह है कि किसी नई तकनीक या मशीन से क्या वास्तव में गांव की भलाई हो रही है? गांव के सबसे कमज़ोर व गरीब परिवारों को इससे लाभ है या हानि? उनकी खाद्य सुरक्षा इससे सुधरती है या बिगड़ती है? नई तकनीक से पशु-पक्षियों व गांव के पर्यावरण पर क्या असर पड़ता है?

इस दृष्टि से फसल, विशेषकर गेहूं कटाई की बदलती तकनीक को देखें-समझें तो कई चिंताजनक परिणाम सामने आते हैं।

जैसे, जब फसल की कटाई मज़दूर अपने हाथ से करते थे, तो उन्हें प्रायः फसल का एक हिस्सा इसके बदले में मिलता था। उनके पास एकत्र हुआ यह अनाज आगामी कम रोज़गार के दिनों में उनके लिए खाद्य सुरक्षा का महत्वपूर्ण स्रोत बनता था। पर कम्बाइन हारवेस्टर के आगमन के बाद गांव में अधिकांश खेतों में न तो कटाई का रोज़गार इन गरीब, भूमिहीन मज़दूरों को मिलता है और न ही इससे जुड़ी खाद्य सुरक्षा वे प्राप्त कर पाते हैं।

फसल की कटाई के दिनों में ही भूस्वामियों को भूमिहीन मज़दूरों की ज़रूरत सबसे अधिक होती थी, जिसके कारण गांव के सबसे कमज़ोर तबके की बेहतर मज़दूरी प्राप्त करने की क्षमता भी बढ़ जाती थी। पर कटाई के कार्य के मशीनीकरण ने पहले से कमज़ोर मज़दूर की इस क्षमता को भी छीन लिया।

गांवों में चारे का संकट पहले से ही था, तिस पर फसल की कटाई कम्बाइन से होती है तो बड़े पैमाने पर भूसे का चारा नष्ट हो जाता है। इस तरह पशुओं की खाद्य सुरक्षा पर भी प्रतिकूल असर पड़ता है। पशुपालन की संभावनाएं सीमित हो जाती हैं या पशुपालन का खर्च बढ़ जाता है क्योंकि गांववासियों को काफी चारा बाज़ार से खरीदना पड़ता है।

हाथ से कटाई होने पर फसल के तने का थोड़ा सा ही भाग खेत में बचता है जिसे अगली फसल की खेती के लिए ज़मीन तैयार करते समय मिट्टी में मिलाना आसान होता था। पर कम्बाइन अधिक बड़ा तना ज़मीन में छोड देता है जो एक समस्या बन जाता है। इससे निपटने के लिए किसान प्रायः इसमें बड़े पैमाने पर आग लगा देते हैं जिससे कुछ दिनों के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में भी प्रदूषण की विकट समस्या उत्पन्न होती है। कुछ जीव-जन्तु भी इस आग से मर सकते हैं। विशेषकर ज़मीन को उपजाऊ बनाने वाले अनेक सूक्ष्म जीवाणुओं पर इस आग का प्रतिकूल असर पड़ता है। नरवाई जलाना हाल के दिनों में एक बड़ी समस्या के रूप में उभरा है।

दूसरी ओर कई किसान, विशेषकर बड़े किसान अपना पक्ष देते हुए यह कहते हैं कि हाल के वर्षों में मौसम अनिश्चित होता जा रहा है। फसल कटाई के दिनों में वर्षा की संभावना बढ़ गई है। अतः फसल बचाने के लिए फसल

कटाई के कार्य को शीघ्रता से पूरा करना ज़रूरी है व इसके लिए वे मशीन का सहारा लेते हैं। वे यह भी कहते हैं कि फसल कटाई के समय कभी-कभी पर्याप्त मज़दूर मिलते ही नहीं हैं। अतः मशीन किराए पर लेना या खरीदना ज़रूरी हो जाता है। दूसरी ओर, मज़दूर कहते हैं कि उनसे ठीक व्यवहार न होने व मज़दूरी कम मिलने के कारण ही उन्हें प्रवासी मज़दूरी को अधिक अपनाना पड़ता है, हालांकि इससे कई समस्याएं जुड़ी हैं।

इस तरह कहीं न कहीं तकनीक का यह मुद्दा गांवों के बदलते आपसी सम्बंधों से, उनमें आई टूटन से भी जुड़ा है। इन तनावों और टूटन को कम करने के व्यापक प्रयास तो वैसे भी जरूरी हैं। इन प्रयासों से शायद यह राह भी निकल सकती है कि किसान यथासंभव मज़दूरों से ही न्यायोचित मज़दूरी पर कटाई का काम करवाएं जबकि मज़दूर अपनी ओर से कटाई के समय पूरा सहयोग दें ताकि कटाई के कार्य को अपेक्षाकृत कम समय में पूरा किया जा सके। और खाद्य सुरक्षा, पशुपालन व खेती का समन्वय बना रहे। ***(स्रोत फीचर्स)***